इतिहास के स्रोतों से

सी एन सुब्रह्मण्यम्

जब अकबर बादशाह की मौत हुई...

एक था बनारसीदास, जौनपुर का रहने वाला। वह हीरे जवाहरात बेचता था। उसे भी उसी तरह नफा नुकसान होता था जैसे उस ज़माने के व्यापारियों को होता था। लेकिन बनारसी को पढ़ने-लिखने का शौक था। जब वह पचपन साल का हुआ, तो उसको लगा, "मेरी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा तो बीत गया। (वह मानता था कि वह एक सौ दस साल जिएगा!) यानी मेरी आधी कहानी तो पूरी हो चुकी है। क्यों न मैं अपनी अब तक की जीवनी लिख डालूँ।" उसे कुछ छन्द लिखने का अभ्यास भी था। उसने अपनी आत्मकथा कविता के रूप में लिखी, जिसे उसने *अर्धकथानक* नाम दिया।

मज़े की बात यह है कि बनारसीदास आज से लगभग चार सौ साल पहले रहता था – बादशाह अकबर के ज़माने में। उसकी आत्मकथा से हम उस समय के लोगों, खासकर व्यापारियों के दुख-दर्द तथा भावनाओं के बारे में करीबी से जान पाते हैं।

यहाँ इस आत्मकथा का एक रोचक किस्सा तुम्हारे लिए दे रहे हैं। वह मुगल इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था और बनारसी के जीवन में भी। उस दिन अकबर की मौत हुई थी...

संवत सोलह सौ बासठा। आयौ कातिक पावस नठा।।
छत्रपति अकबर साहि जलाल। नगर आगरे कीनौं काल।।
आई खबर जौनपुर मांह। प्रजा अनाथ भई बिनु नाह।।
पुरजन लोग भए भयभीत। हिरदै व्याकुलता मुख पीत।।
अकस्मात सुनी वानारसी, सुनी अकबरकौ काल।
सीढ़ी परि बठयौ हुतो, भयो भरम चित चाल।।
आड़ तबाला गिरि पर्यौ, सक्यौ न आप राखि।

...संवत 1662 (यानी सन् 1605) के कार्तिक माह में आगरा शहर में बादशाह जलालुदीन अकबर का देहान्त हो गया। यह खबर जौनपुर शहर पहुँची तो जनता को लगा कि वह अनाथ हो गई। सब शहरवासी भयभीत हो गए। उनका मन व्याकुल हो उठा और चेहरे के रंग उतर गए। सीढ़ी पर बैठे बनारसी ने अचानक यह खबर सुनी तो वह भ्रमित हो गया। अपने आपको सम्भाल नहीं पाया और सीढ़ी से औंधा गिर पड़ा।

इस बीच नगर मैं सोर। भयौ उदंगल चारिहु ओर।।
घर घर दर दर दिए कपाट। हटवानी नहीं बैठे हाट।।
भले बस्त्र अरू भूसन भले। ते सब गाड़े धरती तले।।
हंडवाई गाड़ी कहुं और। नगदी माल निभरमी ठोर।।
घर घर सबनि बिसाहे सस्त्र। लोगन्ह पहिरे मोटे वस्त्र।।
ओढ़े कंबल अथवा खेस। नारिन्ह पहिरे मोटे बेस।।
ऊंच नीच कोउ न पहिचान। धनी दरिद्री भए समान।।
चोरि धारि दसै कहुं नांहि। यौं ही अपभय लोग डरांहि।।

...इस बीच शहर में शोर मच गया। चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी घरों के किवाड़ बन्द किए गए। हाट बाज़ार खाली हो गए। अच्छे कपड़ों और आभूषणों को ज़मीन के नीचे गाड़कर छुपाया गया। कुछ लोग अपने पैसे व सामान गाड़ियों में भरकर शहर छोड़कर चल दिए। घर-घर लोग शस्त्र इकट्ठा करने लगे और मोटे कपड़े पहनने लगे। कम्बल व मोटे सूती वस्त्र पहनने लगे। महिलाओं ने भी ऐसा ही किया। अमीर व गरीब एक से दिखने लगे। यह चोरों के डर से नहीं था, बस यूँ ही लोग डरे हुए थे।

धूम धाम दिन दस रही, बहुरी बरती सांति।
चीठी आई सबनिक, समाचार इस भांति।।
प्रथम पातिसाही करी, बावन बरस जालाल।
अब सोलहसै बासठे, कातिक हूओ काल।।
अकबरकौ नंदन बड़ौ, साहिब साहि सलेम।
नगर आगरै मैं तकत, बैठी अकबर जेम।।
नांउ धरायौ नूरदीं, जहांगीर सुलतान।
फिरि दुहाई मुलकमै, बरती जहं तहं आन।।
इहि विधि चीठीमैं लिखी, आई घर घर बार।
फिरी दुहाई जौनपुर , भयौ सु जयजयकार।।
खरगसेन के घर आनंद। मंगल भयौ गयौ दुख-दंद।।
बनारसी कियौ असनान। कीजै उत्सव दीजै दान।।

इस प्रसंग पर गणेश पायन का बनाया एक चित्र

ऐसा हाहाकार दस दिनों तक बना रहा। फिर इस प्रकार की एक चिट्ठी सब के घर आ पहुँची: जलालुद्दीन अकबर बावन साल बादशाही करके सोलह सौ बासठ वर्ष के कार्तिक मास में मर गए। अकबर का बड़ा बेटा, शाह सलीम, आगरा के सिंहासन पर अकबर जैसे बैठ गया। बादशाह बनने के बाद उसने अपना नाम रखा, नूरुद्दीन जहाँगीर सुलतान। पूरे राज्य को राहत मिली और उसकी हुक्म चलने लगी। इस तरह की चिट्ठी घर-घर पर आई। इससे जौनपुर में राहत मिली और सबने जयजयकार की।

खरगसेन के घर भी खुशियाँ मनाई गईं और सब दुख द्वंद्व मिट गए। बनारसी ने भी स्नान किया और उत्सव मनाया और दान दिया।

गणेश पायन हमारे समय के एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं। उन्होंने अकबर के समय की चित्रकला का अध्ययन करके इस प्रसंग पर एक बहुत ही खूबसूरत चित्र बनाया है। उसका भी मज़ा लेना।

क्या तुम इस प्रसंग पर कोई और चित्र बनाना चाहोगे?

अब इस माह के सवाल:

1. किसी राजा के मरने पर जनता इतनी भयभीत क्यों होती होगी?
2. बनारसी ने इनके लिए कौन-से शब्दों का प्रयोग किया - किवाड़, गहने, बादशाह। खेस शब्द का अर्थ क्या हो सकता है?

हमेशा की तरह अच्छे उत्तरों को हम अगले अंकों में छापेंगे और पुरस्कार भी पहुँचाएँगे।

मीठी चीनी...

अनमोल

ज़ेन सिद्ध से एक शिष्य ने पूछा, "विश्व में सबसे अनमोल वस्तु क्या है?"

सिद्ध ने गम्भीरता से जवाब दिया, "मरी हुई बिल्ली की खोपड़ी।"

शिष्य चक्कर में पड़ गया।

बोला, "मरी हुई बिल्ली की खोपड़ी अनमोल कैसे हुई?"

"क्योंकि," गुरू ने कहा, "उसका मूल्य किसी को नहीं मालूम।"

एक चीनी कहावत है

अगर कहीं से तुम्हें दो पैसे मिलें तो एक पैसे की रोटी ले लो और दूसरे पैसे से एक फूल। रोटी तुम्हें ज़िन्दा रखेगी और फूल तुम्हें जीने का ढंग सिखाएगा।